॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता — क्रम पाठः

चतुर्थकाण्डे चतुर्थः प्रश्नः

पञ्चमचितिशेषनिरूपणं

ॐ नमः परमात्मने । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ॐ

र॒श्मिर॑सि। अ॒सि॒ ख्षया॑य। ख्षया॑य त्वा। त्वा॒ ख्षय᳚म्। ख्षय॑म् जिन्व। जि॒न्व॒ प्रेति॑ः।
प्रेति॑रसि। प्रेति॒रिति॒ प्र—इ॒ति॒ः। अ॒सि॒ धर्मा॑य। धर्मा॑य त्वा। त्वा॒ धर्म᳚म्। धर्म॑म् जिन्व। जि॒न्वा-
न्वि॑तिः। अन्वि॑तिरसि। अन्वि॑ति॒रित्यनु॑—इ॒ति॒ः। अ॒सि॒ दि॒वे। दि॒वे त्वा᳚। त्वा॒ दिव᳚म्। दिव॑म्
जिन्व। जि॒न्व॒ स॒न्धिः। स॒न्धिर॑सि। स॒न्धिरिति॑ सम्—धिः। अ॒स्य॒न्तरि॑ख्षाय। अ॒न्तरि॑ख्षाय
त्वा। त्वा॒ऽन्तरि॑ख्षम्। अ॒न्तरि॑ख्षम् जिन्व। जि॒न्व॒ प्र॒ति॒धिः। प्र॒ति॒धिर॑सि। प्र॒ति॒धिरिति॑ प्रति—
धिः। अ॒सि॒ पृ॒थि॒व्यै। पृ॒थि॒व्यै त्वा᳚। त्वा॒ पृ॒थि॒वीम्। पृ॒थि॒वीम् जि॑न्व। जि॒न्व॒ वि॒ष्ट॒म्भः। वि॒ष्ट॒-
म्भो॑ऽसि। वि॒ष्ट॒म्भ इति॑ वि—स्त॒म्भः। अ॒सि॒ वृ॒ष्ट्यै᳚। वृ॒ष्ट्यै᳚ त्वा। त्वा॒ वृष्टि᳚म्। वृष्टि॑म् जिन्व। जि॒न्व॒
प्र॒वा। प्र॒वाऽसि॑। प्र॒वेति॑ प्र—वा। अ॒स्यह्ने᳚। अह्ने᳚ त्वा। त्वाऽह॑ः। अह॑र् जिन्व। जि॒न्वा॒नु॒वा। अ॒नु॒-
वाऽसि॑। अ॒नु॒वेत्य॑नु—वा। अ॒सि॒ रात्रि॑यै। रात्रि॑यै त्वा। त्वा॒ रात्रि᳚म्। रात्रि॑म् जिन्व। जि॒न्वो॒शिक्।
उ॒शिग॑सि। अ॒सि॒ वसु॑भ्यः। ॥ [१] ॥ वसु॑भ्यस्त्वा। वसु॑भ्य॒ इति॒ वसु॑—भ्य॒ः। त्वा॒ वसू॑न्।
वसू᳚न् जिन्व। जि॒न्व॒ प्र॒के॒तः। प्र॒के॒तो॑ऽसि। प्र॒के॒त इति॑ प्र—के॒तः। अ॒सि॒ रु॒द्रेभ्य॑ः। रु॒द्रेभ्य॑स्त्वा।
त्वा॒ रु॒द्रान्। रु॒द्रान् जि॑न्व। जि॒न्व॒ सु॒दी॒तिः। सु॒दी॒तिर॑सि। सु॒दी॒तिरिति॑ सु—दी॒तिः। अ॒स्या॒-
दि॒त्येभ्य॑ः। आ॒दि॒त्येभ्य॑स्त्वा। त्वा॒ऽऽदि॒त्यान्। आ॒दि॒त्यान् जि॑न्व। जि॒न्वौज॑ः। ओजो॑ऽसि।
अ॒सि॒ पि॒तृभ्य॑ः। पि॒तृभ्य॑स्त्वा। पि॒तृभ्य॒ इति॑ पि॒तृ—भ्य॒ः। त्वा॒ पि॒तॄन्। पि॒तॄन् जि॑न्व। जि॒न्व॒
तन्तु॑ः। तन्तु॑रसि। अ॒सि॒ प्र॒जाभ्य॑ः। प्र॒जाभ्य॑स्त्वा। प्र॒जाभ्य॒ इति॑ प्र—जाभ्य॑ः। त्वा॒ प्र॒जाः। प्र॒जा

जिन्व। प्रजा इति प्र—जाः। जिन्व पृतनाषाट्। पृतनाषाडसि। असि पशुभ्यः। पशुभ्यस्त्वा। पशुभ्य इति पशु—भ्यः। त्वा पशून्। पशून् जिन्व। जिन्व रेवत्। रेवदसि। अस्योषधीभ्यः। ओषधीभ्यस्त्वा। ओषधीभ्य इत्योषधि—भ्यः। त्वौषधीः। ओषधीर् जिन्व। जिन्वाभिजित्। अभिजिदसि। अभिजिदित्यभि—जित्। असि युक्तग्रावा। युक्तग्रावेन्द्राय। युक्तग्रावेति युक्त—ग्रावा। इन्द्राय त्वा। त्वेन्द्रम्। इन्द्रम् जिन्व। जिन्वाधिपतिः। अधिपतिरसि। अधिपतिरि-त्यधि—पतिः। असि प्राणाय। प्राणाय त्वा। प्राणायेति प्र—अनाय। ॥ [२] ॥ त्वा प्राणम्। प्राणम् जिन्व। प्राणमिति प्र—अनम्। जिन्व यन्ता। यन्ताऽसि। अस्यपानाय। अपानाय त्वा। अपानायेत्यप—अनाय। त्वाऽपानम्। अपानम् जिन्व। अपानमित्यप—अनम्। जिन्व सꣳसर्पः। सꣳसर्पोऽसि। सꣳसर्प इति सम्—सर्पः। असि चक्षुषे। चक्षुषे त्वा। त्वा चक्षुः। चक्षुर् जिन्व। जिन्व वयोधाः। वयोधा असि। वयोधा इति वयः—धाः। असि श्रोत्राय। श्रोत्राय त्वा। त्वा श्रोत्रम्। श्रोत्रम् जिन्व। जिन्व त्रिवृत्। त्रिवृदसि। त्रिवृदिति त्रि—वृत्। असि प्रवृत्। प्रवृदसि। प्रवृदिति प्र—वृत्। असि सँवृत्। सँवृदसि। सँवृदिति सम्—वृत्। असि विवृत्। विवृदसि। विवृदिति वि—वृत्। असि सꣳरोहः। सꣳरोहोऽसि। सꣳरोह इति सम्—रोहः। असि नीरोहः। नीरोहोऽसि। नीरोह इति निः—रोहः। असि प्ररोहः। प्ररोहोऽसि। प्ररोह इति प्र—रोहः। अस्यनुरोहः। अनुरोहोऽसि। अनुरोह इत्यनु—रोहः। असि वसुकः। वसु-कोऽसि। असि वेषश्रिः। वेषश्रिरसि। वेषश्रिरिति वेष—श्रिः। असि वस्यष्टिः। वस्यष्टिरसि। असीत्यसि॥ ॥ [३] ॥

(उशिगसि प्राणाय त्रिचत्वारिꣳशच्च) ॥ १ ॥

राड्यसि। असि प्राची। प्राची दिक्। दिग् वसवः। वसवस्ते। ते देवाः। देवा अधिप-तयः। अधिपतयोऽग्निः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। अग्निर्हेतीनाम्। हेतीनाम् प्रतिधर्ता। प्रतिधर्ता त्रिवृत्। प्रतिधर्तेति प्रति—धर्ता। त्रिवृत् त्वा। त्रिवृदिति त्रि—वृत्। त्वा स्तोमः। स्तोमः पृथिव्याम्। पृथिव्याꣳ श्रयतु। श्रयत्वाज्यम्। आज्यमुक्थम्। उक्थमव्यथयत्। अव्य-थयथ् स्तभ्नातु। स्तभ्नातु रथन्तरम्। रथन्तरꣳ साम। रथन्तरमिति रथम्—तरम्। साम प्रति-

ष्ठित्यै। प्रतिष्ठित्यै विराट्। प्रतिष्ठित्या इति प्रति—स्थित्यै। विराडसि। विराडिति वि—राट्। असि दक्षिणा। दक्षिणा दिक्। दिग् रुद्राः। रुद्रास्ते। ते देवाः। देवा अधिपतयः। अधिपतय इन्द्रः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। इन्द्रो हेतीनाम्। हेतीनाम् प्रतिधर्ता। प्रतिधर्ता पञ्चदशः। प्रतिधर्तेति प्रति—धर्ता। पञ्चदशस्त्वा। पञ्चदश इति पञ्च—दशः। त्वा स्तोमः। स्तोमः पृथिव्याम्। पृथिव्याꣳ श्रयतु। श्रयतु प्रउगम्। प्रउगमुक्थम्। उक्थमव्यथयत्। अव्यथयथ् स्तभ्नातु। स्तभ्नातु बृहत्। बृहथ् साम। साम प्रतिष्ठित्यै। प्रतिष्ठित्यै सम्राट्। प्रतिष्ठित्या इति प्रति—स्थित्यै। सम्राडसि। सम्राडिति सम्—राट्। असि प्रतीची। प्रतीची दिक्। दिगादित्याः। ॥ [४] ॥ आदित्यास्ते। ते देवाः। देवा अधिपतयः। अधिपतयः सोमः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। सोमो हेतीनाम्। हेतीनाम् प्रतिधर्ता। प्रतिधर्ता सप्तदशः। प्रतिधर्तेति प्रति—धर्ता। सप्तदशस्त्वा। सप्तदश इति सप्त—दशः। त्वा स्तोमः। स्तोमः पृथिव्याम्। पृथिव्याꣳ श्रयतु। श्रयतु मरुत्वतीयम्। मरुत्वतीयमुक्थम्। उक्थमव्यथयत्। अव्यथयथ् स्तभ्नातु। स्तभ्नातु वैरूपम्। वैरूपꣳ साम। साम प्रतिष्ठित्यै। प्रतिष्ठित्यै स्वराट्। प्रतिष्ठित्या इति प्रति—स्थित्यै। स्वराडसि। स्वराडिति स्व—राट्। अस्युदीची। उदीची दिक्। दिग् विश्वे। विश्वे ते। ते देवाः। देवा अधिपतयः। अधिपतयो वरुणः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। वरुणो हेतीनाम्। हेतीनाम् प्रतिधर्ता। प्रतिधर्तैकविꣳशः। प्रतिधर्तेति प्रति—धर्ता। एकविꣳशस्त्वा। एकविꣳश इत्येक—विꣳशः। त्वा स्तोमः। स्तोमः पृथिव्याम्। पृथिव्याꣳ श्रयतु। श्रयतु निष्केवल्यम्। निष्केवल्यमुक्थम्। उक्थमव्यथयत्। अव्यथयथ् स्तभ्नातु। स्तभ्नातु वैराजम्। वैराजꣳ साम। साम प्रतिष्ठित्यै। प्रतिष्ठित्या अधिपत्नी। प्रतिष्ठित्या इति प्रति—स्थित्यै। अधिपत्न्यसि। अधिपत्नीत्यधि—पत्नी। असि बृहती। बृहती दिक्। दिङ्मरुतः। मरुतस्ते। ते देवाः। देवा अधिपतयः। अधिपतयो बृहस्पतिः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। ॥ [५] ॥ बृहस्पतिर्हेतीनाम्। हेतीनाम् प्रतिधर्ता। प्रतिधर्ता त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ। प्रतिधर्तेति प्रति—धर्ता। त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशौ त्वा। त्रिणवत्रयस्त्रिꣳशाविति त्रिणव—त्रयस्त्रिꣳशौ। त्वा स्तोमौ। स्तोमौ पृथिव्याम्। पृथिव्याꣳ श्रयताम्। श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते। वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे। वैश्वदेवाग्निमारुते इति वैश्वदेव—आग्निमारुते। उक्थे अव्यथयन्ती। उक्थे इत्युक्थे। अव्यथयन्ती स्तभ्नीताम्। अव्यथयन्ती

इत्यव्यथयन्ती। स्तभ्नीताꣳ शाक्वररैवते। शाक्वररैवते सामनी। शाक्वररैवते इति शाक्वर—रैवते। सामनी प्रतिष्ठित्यै। सामनी इति सामनी। प्रतिष्ठित्या अन्तरिख्षाय। प्रतिष्ठित्या इति प्रति—स्थित्यै। अन्तरिख्षायर्षयः। ऋषयस्त्वा। त्वा प्रथमजाः। प्रथमजा देवेषु। प्रथमजा इति प्रथम—जाः। देवेषु दिवः। दिवो मात्रया। मात्रया वरिणा। वरिणा प्रथन्तु। प्रथन्तु विधर्ता। विधर्ता च। विधर्तेति वि—धर्ता। चायम्। अयमधिपतिः। अधिपतिश्च। अधिपतिरित्यधि—पतिः। च ते। ते त्वा। त्वा सर्वे। सर्वे सँविदानाः। सँविदाना नाकस्य। सँविदाना इति सम्—विदानाः। नाकस्य पृष्ठे। पृष्ठे सुवर्गे। सुवर्गे लोके। सुवर्ग इति सुवः—गे। लोके यजमानम्। यजमानम् च। च सादयन्तु। सादयन्त्विति सादयन्तु॥ ॥ [६] ॥

(प्रतीची दिङ् मरुतस्ते देवा अधिपतय श्चत्वारिꣳशच्च) ॥ २ ॥

अयम् पुरः। पुरो हरिकेशः। हरिकेशः सूर्यरश्मिः। हरिकेश इति हरि—केशः। सूर्यरश्मिस्तस्य। सूर्यरश्मिरिति सूर्य—रश्मिः। तस्य रथगृथ्सः। रथगृथ्सश्च। रथगृथ्स इति रथ—गृथ्सः। च रथौजाः। रथौजाश्च। रथौजा इति रथ—ओजाः। च सेनानिग्रामण्यौ। सेनानिग्रामण्यौ पुञ्जिकस्थला। सेनानिग्रामण्याविति सेनानि—ग्रामण्यौ। पुञ्जिकस्थला च। पुञ्जिकस्थलेति पुञ्जिक—स्थला। च कृतस्थला। कृतस्थला च। कृतस्थलेति कृत—स्थला। चाफ्सरसौ। अफ्सरसौ यातुधानाः। यातुधाना हेतिः। यातुधाना इति यातु—धानाः। हेती रख्षाꣳसि। रख्षाꣳसि प्रहेतिः। प्रहेतिरयम्। प्रहेतिरिति प्र—हेतिः। अयम् दख्षिणा। दख्षिणा विश्वकर्मा। विश्वकर्मा तस्य। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। तस्य रथस्वनः। रथस्वनश्च। रथस्वन इति रथ—स्वनः। च रथेचित्रः। रथेचित्रश्च। रथेचित्र इति रथे—चित्रः। च सेनानिग्रामण्यौ। सेनानिग्रामण्यौ मेनका। सेनानिग्रामण्याविति सेनानि—ग्रामण्यौ। मेनका च। च सहजन्या। सहजन्या च। सहजन्येति सह—जन्या। चाफ्सरसौ। अफ्सरसौ दङ्ख्ष्णवः। दङ्ख्ष्णवः पशवः। पशवो हेतिः। हेतिः पौरुषेयः। पौरुषेयो वधः। वधः प्रहेतिः। प्रहेतिरयम्। प्रहेतिरिति प्र—हेतिः। अयम् पश्चात्। पश्चाद् विश्वव्यचाः। विश्वव्यचास्तस्य। विश्वव्यचा इति विश्व—व्यचाः। तस्य रथप्रोतः। रथप्रोतश्च। रथप्रोत इति रथ—प्रोतः। चासमरथः।

असमरथश्च। असमरथ इत्यसम—रथः। च सेनानिग्रामण्यौ। सेनानिग्रामण्यौ प्रम्लोचन्ती। सेनानिग्रामण्याविति सेनानि—ग्रामण्यौ। प्रम्लोचन्ती च। प्रम्लोचन्तीति प्र—म्लोचन्ती। चानु-म्लोचन्ती। ॥ [७] ॥ अनुम्लोचन्ती च। अनुम्लोचन्तीत्यनु—म्लोचन्ती। चाप्सरसौ। अप्स-रसौ सर्पाः। सर्पा हेतिः। हेतिर् व्याघ्राः। व्याघ्राः प्रहेतिः। प्रहेतिरयम्। प्रहेतिरिति प्र—हेतिः। अयमुत्तरात्। उत्तराथ् सँय्यद्वसुः। उत्तरादित्युत्—तरात्। सँय्युद्वसुस्तस्य। सँय्यद्व-सुरिति सँय्यत्—वसुः। तस्य सेनजित्। सेनजिच् च। सेनजिदिति सेन—जित्। च सुषेणः। सुषेणश्च। सुषेण इति सु—सेनः। च सेनानिग्रामण्यौ। सेनानिगामण्यौ विश्वाची। सेनानिग्रा-मण्याविति सेनानि—ग्रामण्यौ। विश्वाची च। च घृताची। घृताची च। चाप्सरसौ। अप्स-रसावापः। आपो हेतिः। हेतिर् वातः। वातः प्रहेतिः। प्रहेतिरयम्। प्रहेतिरिति प्र—हेतिः। अयमुपरि। उपर्यर्वाग्वसुः। अर्वाग्वसुस्तस्य। अर्वाग्वसुरित्यर्वाक्—वसुः। तस्य तार्क्ष्यः। तार्क्ष्यश्च। चारिष्टनेमिः। अरिष्टनेमिश्च। अरिष्टनेमिरित्यरिष्ट—नेमिः। च सेनानिग्रामण्यौ। सेनानिग्रामण्यावुर्वशी। सेनानिग्रामण्याविति सेनानि—ग्रामण्यौ। उर्वशी च। च पूर्वचित्तिः। पूर्वचित्तिश्च। पूर्वचित्तिरिति पूर्व—चित्तिः। चाप्सरसौ। अप्सरसौ विद्युत्। विद्युद्धेतिः। विद्यु-दिति वि—द्युत्। हेतिरवस्फूर्जन्न्। अवस्फूर्जन् प्रहेतिः। अवस्फूर्जन्नित्यव—स्पूर्जन्न्। प्रहेति-स्तेभ्यः। प्रहेतिरिति प्र—हेतिः। तेभ्यो नमः। नमस्ते। ते नः। नो मृडयन्तु। मृडयन्तु ते। ते यम्। यम् द्विष्मः। ॥ [८] ॥ द्विष्मो यः। यश्च। च नः। नो द्वेष्टि। द्वेष्टि तम्। तँव्वः। वो जम्भे। जम्भे दधामि। दधाम्यायोः। आयोस्त्वा। त्वा सदने। सदने सादयामि। सादयाम्य-वतः। अवतश्छायायाम्। छायायाम् नमः। नमः समुद्राय। समुद्राय नमः। नमः समुद्रस्य। समुद्रस्य चक्षसे। चक्षसे परमेष्ठी। परमेष्ठी त्वा। त्वा सादयतु। सादयतु दिवः। दिवः पृष्ठे। पृष्ठे व्यचस्वतीम्। व्यचस्वतीम् प्रथस्वतीम्। प्रथस्वतीव्ँविभूमतीम्। विभूमतीम् प्रभूमतीम्। विभूमतीमिति वि—भूमतीम्। प्रभूमतीम् परिभूमतीम्। प्रभूमतीमिति प्र—भूमतीम्। परिभू-मतीम् दिवम्। परिभूमतीमिति परि—भूमतीम्। दिवँय्यच्छ। यच्छ दिवम्। दिवम् दृꣳह। दृꣳह दिवम्। दिवम् मा। मा हिꣳसीः। हिꣳसीर् विश्वस्मै। विश्वस्मै प्राणाय। प्राणायापानाय। प्राणा-येति प्र—अनाय। अपानाय व्यानाय। अपानायेत्यप—अनाय। व्यानायोदानाय। व्यानायेति

वि—अनाय। उदानाय प्रतिष्ठायै। उदानायेत्युत्—अनाय। प्रतिष्ठायै चरित्राय। प्रतिष्ठाया इति प्रति—स्थायै। चरित्राय सूर्यः। सूर्यस्त्वा। त्वाऽभि। अभि पातु। पातु मह्या। मह्या स्वस्त्या। स्वस्त्या छर्दिषा। छर्दिषा शन्तमेन। शन्तमेन तया। शन्तमेनेति शम्—तमेन। तया देवतया। देवतयाऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवा। ध्रुवा सीद। सीदेति सीद॥ प्रोथदश्वः। अश्वो न। न यवसे। यवसे अविष्यन्न्। अविष्यन्यदा। यदा महः। महः सँव्वरणात्। सँव्वरणाद् व्यस्थात्। सँव्वरणादिति सम्—वरणात्। व्यस्थादिति वि—अस्थात्॥ आदस्य। अस्य वातः। वातो अनु। अनु वाति। वाति शोचिः। शोचिरध। अध स्म। स्म ते। ते व्रजनम्। व्रजनम् कृष्णम्। कृष्ण-मस्ति। अस्तीत्यस्ति॥ ॥ [९] ॥

(प्रश्लोचन्ती च यङ् स्वस्त्या ऽष्टाविꣳशतिश्च) ॥ ३ ॥

अग्निर् मूर्द्धा। मूर्द्धा दिवः। दिवः ककुत्। ककुत् पतिः। पतिः पृथिव्याः। पृथिव्या अयम्। अयमित्ययम्॥ अपाꣳ रेताꣳसि। रेताꣳसि जिन्वति। जिन्वतीति जिन्वति॥ त्वामग्ने। अग्ने पुष्करात्। पुष्करादधि। अध्यथर्वा। अथर्वा निः। निरमन्थत। अमन्थतेत्यमन्थत॥ मूर्द्ध्नो विश्वस्य। विश्वस्य वाघतः। वाघत इति वाघतः॥ अयमग्निः। अग्निः सहस्रिणः। सहस्रिणो वाजस्य। वाजस्य शतिनः। शतिनस्पतिः। पतिरिति पतिः॥ मूर्द्धा कविः। कवीरयीणाम्। रयीणामिति रयीणाम्॥ भुवो यज्ञस्य। यज्ञस्य रजसः। रजसश्च। च नेता। नेता यत्र। यत्रा नियुद्भिः। नियुद्भिः सचसे। नियुद्भिरिति नियुत्—भिः। सचसे शिवाभिः। शिवाभिरिति शिवाभिः॥ दिवि मूर्द्धानम्। मूर्द्धानम् दधिषे। दधिषे सुवर्षाम्। सुवर्षाम् जिह्वाम्। सुवर्षा-मिति सुवः—साम्। जिह्वामग्ने। अग्ने चकृषे। चकृषे हव्यवाहम्। हव्यवाहमिति हव्य—वाहम्॥ अबोध्यग्निः। अग्निः समिधा। समिधा जनानाम्। समिधेति सम्—इधा। जनानाम् प्रति। ॥ [१०] ॥ प्रति धेनुम्। धेनुमिव। इवायतीम्। आयतीमुषासम्। आयतीमित्या—यतीम्। उषासमित्युषासम्॥ यह्वा इव। इव प्र। प्र वयाम्। वयामुज्जिहानाः। उज्जिहानाः प्र। उज्जिहाना इत्युत्—जिहानाः। प्र भानवः। भानवः सिस्रते। सिस्रते नाकम्। नाकमच्छ। अच्छेत्यच्छ॥ अवोचाम कवये। कवये मेद्ध्याय। मेद्ध्याय वचः। वचो वन्दारु। वन्दारु वृषभाय। वृषभाय

वृष्णे᳚। वृष्ण॒ इति॒ वृष्णे᳚॥ गवि॑ष्ठिरो॒ नम॑सा। नम॑सा॒ स्तोम॑म्। स्तोम॑म॒ग्नौ। अ॒ग्नौ दि॒वि। दि॒वीव॑। इ॒व रु॒क्मम्। रु॒क्ममु॒र्व्य॑ञ्च॑म्। उ॒र्व्य॑ञ्च॑मश्रेत्। अ॒श्रे॒दि॒त्य॑श्रेत्॥ जन॑स्य गो॒पाः। गो॒पा अ॑जनिष्ट। गो॒पा इति॑ गो—पाः। अ॒ज॒नि॒ष्ट॒ जागृ॑विः। जागृ॑विर॒ग्निः। अ॒ग्निः सु॒दक्ष॑ः। सु॒दक्ष॑ः सुवि॒ताय॑। सु॒दक्ष॒ इति॑ सु॒—दक्ष॑ः। सु॒वि॒ता॒य॒ नव्य॑से। नव्य॑स॒ इति॒ नव्य॑से॥ घृ॒तप्र॑तीको बृह॒ता। घृ॒तप्र॑तीक॒ इति॑ घृ॒त—प्र॒तीकः। बृ॒ह॒ता दि॑वि॒स्पृशा᳚। दि॒वि॒स्पृशा᳚ द्यु॒मत्। दि॒वि॒स्पृशेति॑ दिवि—स्पृशा᳚। द्यु॒मद् वि। द्यु॒मदिति॑ द्यु—मत्। वि भा॑ति। भा॒ति॒ भ॒रते᳚भ्यः। भ॒रते᳚भ्यः शुचि॑ः। शु॒चि॒रि॒ति॒ शुचि॑ः॥ त्वाम॑ग्ने। अ॒ग्ने॒ अङ्गि॑रसः। अङ्गि॑रसो॒ गुहा᳚। ॥ [११] ॥ गुहा॑ हि॒तम्। हि॒तमनु॑। अन्व॑विन्दन्न्। अ॒वि॒न्द॒न्छि॒श्रि॒या॒णम्। शि॒श्रि॒या॒णँ॒व्वने॑वने। वने॑वन॒ इति॒ वने॑—व॒ने॥ स जा॑यसे। जा॒य॒से॒ म॒थ्यमा॑नः। म॒थ्यमा॑नः॒ सह॑ः। सहो॑ म॒हत्। म॒हत् त्वाम्। त्वामा॑हुः। आ॒हुः॒ सह॑सः। सह॑सस्पु॒त्रम्। पु॒त्रम॑ङ्गिरः। अ॒ङ्गि॒र॒ इत्य॑ङ्गिरः॥ य॒ज्ञस्य॑ के॒तुम्। के॒तुम् प्र॑थ॒मम्। प्र॒थ॒मम् पु॒रोहि॑तम्। पु॒रोहि॑तम॒ग्निम्। पु॒रोहि॑त॒मिति॑ पु॒रः—हि॒तम्। अ॒ग्निम् नर॑ः। नर॑स्त्रिषध॒स्थे। त्रि॒ष॒ध॒स्थे सम्। त्रि॒ष॒ध॒स्थ इति॑ त्रि—स॒ध॒स्थे। समि॑न्धते। इ॒न्ध॒त॒ इती᳚न्धते॥ इन्द्रे॑ण दे॒वैः। दे॒वैः स॒रथ᳚म्। स॒रथ॒ꣳ॒ सः। स॒रथ॒मिति॑ स—रथ᳚म्। स ब॒र्हिषि॑। ब॒र्हि॒षि सीद॑त्। सीद॒न्नि। नि होता᳚। होता॑ य॒जथा॑य। य॒जथा॑य सु॒क्रतु॑ः। सु॒क्रतु॒रिति॑ सु—क्रतु॑ः॥ त्वाम् चि॒त्रश्र॑वस्तम। चि॒त्र॒श्र॒व॒स्त॒म॒ हव॑न्ते। चि॒त्र॒श्र॒व॒स्त॒मेति॑ चित्रश्रवः—त॒म। हव॑न्ते वि॒क्षु। वि॒क्षु ज॒न्तव॑ः। ज॒न्त॒व॒ इति॑ ज॒न्तव॑ः॥ शो॒चिष्के॑शम् पुरुप्रिय। शो॒चिष्के॑श॒मिति॑ शो॒चिः—के॒श॒म्। पु॒रु॒प्रि॒या॒ग्ने᳚। पु॒रु॒प्रि॒येति॑ पुरु—प्रि॒य। अग्ने॑ ह॒व्याय॑। ह॒व्या॒य॒ वोढ॑वे। वोढ॑व॒ इति॒ वोढ॑वे॥ सखा॑यः सम्। सँव्व॑ः। वः स॒म्यञ्च᳚म्। स॒म्यञ्च॒मिष᳚म्। इष॒ꣳ॒ स्तोम᳚म्। ॥ [१२] ॥ स्तोम॑म् च। चा॒ग्नये᳚। अ॒ग्नय॒ इत्य॒ग्नये᳚॥ व॒र्षि॒ष्ठाय॑ क्षिती॒नाम्। क्षि॒ती॒नामू॒र्जः। ऊ॒र्जो नप्त्रे᳚। नप्त्रे॒ सह॑स्वते। सह॑स्वत॒ इति॒ सह॑स्वते॥ सꣳ॒स॒मित्। सꣳ॒स॒मिति॒ सम्—स॒म्। इद् यु॑वसे। यु॒व॒से॒ वृ॒ष॒न्न्। वृ॒ष॒न्न॒ग्ने᳚। अग्ने॒ विश्वा॑नि। विश्वा॒न्य॒र्यः। अ॒र्य आ। एत्या॥ इ॒डस्प॒दे। प॒दे सम्। समि॑द्ध्यसे। इ॒द्ध्य॒से॒ सः। स न॑ः। नो॒ वसू॑नि। वसू॒न्या। आ भ॑र। भ॒रेति॑ भर॥ ए॒ना व॑ः। वो॒ अ॒ग्निम्। अ॒ग्निम् नम॑सा। नम॑सो॒र्जः। ऊ॒र्जो नपा॑तम्। नपा॑त॒मा। आ हु॑वे। हु॒व इति॑ हुवे॥ प्रि॒यम् चेति॑ष्ठम्। चेति॑ष्ठमर॒तिम्। अ॒र॒तिꣳ॒ स्व॑द्ध्व॒रम्। स्व॒द्ध्व॒रँ॒व्विश्व॑स्य। स्व॒द्ध्व॒रमिति॑ सु—अ॒द्ध्व॒रम्। विश्व॑स्य

दूतम्। दूतममृतम्। अमृतमित्यमृतम्॥ स योजते। योजते अरुषः। अरुषो विश्वभोजसा। विश्वभोजसा सः। विश्वभोजसेति विश्व—भोजसा। स दुद्रवत्। दुद्रवथ् स्वाहुतः। स्वाहुत इति सु—आहुतः॥ सुब्रह्मा यज्ञः। सुब्रह्मेति सु—ब्रह्मा। यज्ञः सुशमी। सुशमी वसूनाम्। सुशमीति सु—शमी। ॥ [१३] ॥ वसूनाम् देवम्। देवꣳ राधः। राधो जनानाम्। जनानामिति जनानाम्॥ उदस्य। अस्य शोचिः। शोचिरस्थात्। अस्थादाजुह्वानस्य। आजुह्वानस्य मीढुषः। आजुह्वानस्येत्या—जुह्वानस्य। मीढुष इति मीढुषः॥ उद् धूमासः। धूमासो अरुषासः। अरुषासो दिविस्पृशः। दिविस्पृशः सम्। दिविस्पृश इति दिवि—स्पृशः। समग्निम्। अग्निमिन्धते। इन्धते नरः। नर इति नरः॥ अग्ने वाजस्य। वाजस्य गोमतः। गोमत ईशानः। गोमत इति गो—मतः। ईशानः सहसः। सहसो यहो। यहो इति यहो॥ अस्मे धेहि। अस्मे इत्यस्मे। धेहि जातवेदः। जातवेदो महि। जातवेद इति जात—वेदः। महि श्रवः। श्रव इति श्रवः॥ स इधानः। इधानो वसुः। वसुष्कविः। कविरग्निः। अग्निरीडेन्यः। ईडेन्यो गिरा। गिरेति गिरा॥ रेवदस्मभ्यम्। अस्मभ्यम् पुर्वणीक। अस्मभ्यमित्यस्म—भ्यम्। पुर्वणीक दीदिहि। पुर्वणीकेति पुरु—अनीक। दीदिहीति दीदिहि॥ ख्षपो राजन्न्। राजन्नुत। उत त्मना। त्मनाऽग्ने। अग्ने वस्तोः। वस्तोरुत। उतोषसः। उषस इत्युषसः॥ स तिग्मजम्भ। तिग्मजम्भ रख्षसः। तिग्मजम्भेति तिग्म—जम्भ। ॥ [१४] ॥ रख्षसो दह। दह प्रति। प्रतीति प्रति॥ आ ते। ते अग्ने। अग्न इधीमहि। इधीमहि द्युमन्तम्। द्युमन्तम् देव। द्युमन्तमिति द्यु—मन्तम्। देवाजरम्। अजरमित्यजरम्॥ यद्ध। ह स्या। स्या ते। ते पनीयसी। पनीयसी समित्। समिद् दीदयति। समिदिति सम्—इत्। दीदयति द्यवि। द्यवीषम्। इषꣳ स्तोतृभ्यः। स्तोतृभ्य आ। स्तोतृभ्य इति स्तोतृ—भ्यः। आ भर। भरेति भर॥ आ ते। ते अग्ने। अग्न ऋचा। ऋचा हविः। हविः शुक्रस्य। शुक्रस्य ज्योतिषः। ज्योतिषस्पते। पत इति पते॥ सुश्चन्द्र दस्म। सुश्चन्द्रेति सु—चन्द्र। दस्म विश्पते। विश्पते हव्यवाट्। हव्यवाट् तुभ्यम्। हव्यवाडिति हव्य—वाट्। तुभ्यꣳ हूयते। हूयत इषम्। इषꣳ स्तोतृभ्यः। स्तोतृभ्य आ। स्तोतृभ्य इति स्तोतृ—भ्यः। आ भर। भरेति भर॥ उभे सुश्चन्द्र। उभे इत्युभे। सुश्चन्द्र सर्पिषः। सुश्चन्द्रेति सु—चन्द्र। सर्पिषो दर्वी। दर्वी श्रीणीषे। दर्वी इति दर्वी। श्रीणीष आसनि। आसनीत्यासनि॥ उतो नः। उतो

इत्युतो। न उत्। उत् पुपूर्याः। पुपूर्या उक्थेषु। ॥ [१५] ॥ उक्थेषु शवसः। शवसस्पते। पत इषम्। इषꣳ स्तोतृभ्यः। स्तोतृभ्य आ। स्तोतृभ्य इति स्तोतृ—भ्यः। आ भर। भरेति भर॥ अग्ने तम्। तमद्य। अद्याश्वम्। अश्वम् न। न स्तोमैः। स्तोमैः क्रतुम्। क्रतुम् न। न भद्रम्। भद्रꣳ हृदिस्पृशम्। हृदिस्पृशमिति हृदि—स्पृशम्॥ ऋद्ध्यामा ते। त ओहैः। ओहैरित्योहैः॥ अधा हि। ह्यग्ने। अग्ने क्रतोः। क्रतोर् भद्रस्य। भद्रस्य दक्षस्य। दक्षस्य साधोः। साधोरिति साधोः॥ रथीर्ऋतस्य। ऋतस्य बृहतः। बृहतो बभूथ। बभूथेति बभूथ॥ आभिष्टे। ते अद्य। अद्य गीर्भिः। गीर्भिर् गृणन्तः। गृणन्तोऽग्ने। अग्ने दाशेम। दाशेमेति दाशेम॥ प्र ते। ते दिवः। दिवो न। न स्तनयन्ति। स्तनयन्ति शुष्माः। शुष्मा इति शुष्माः॥ एभिर् नः। नो अर्कैः। अर्कैर् भव। भवा नः। नो अर्वाङ्। अर्वाङ्ख् सुवः। ॥ [१६] ॥ सुवर् न। न ज्योतिः। ज्योतिरिति ज्योतिः॥ अग्ने विश्वेभिः। विश्वेभिः सुमनाः। सुमना अनीकैः। सुमना इति सु—मनाः। अनीकैरित्यनीकैः॥ अग्निꣳ होतारम्। होतारम् मन्ये। मन्ये दास्वन्तम्। दास्वन्तँव्वसोः। वसोः सूनुम्। सूनुꣳ सहसः। सहसो जातवेदसम्। जातवेदसमिति जात—वेदसम्॥ विप्रम् न। न जातवेदसम्। जातवेदसमिति जात—वेदसम्॥ य ऊर्द्ध्वया। ऊर्द्ध्वया स्वद्ध्वरः। स्वद्ध्वरो देवः। स्वद्ध्वर इति सु—अद्ध्वरः। देवो देवाच्या। देवाच्या कृपा। कृपेति कृपा॥ घृतस्य विभ्राष्टिम्। विभ्राष्टिमनु। विभ्राष्टिमिति वि—भ्राष्टिम्। अनु शुक्रशोचिषः। शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य। शुक्रशोचिष इति शुक्र—शोचिषः। आजुह्वानस्य सर्पिषः। आजुह्वानस्येत्या—जुह्वानस्य। सर्पिष इति सर्पिषः॥ अग्ने त्वम्। त्वम् नः। नो अन्तमः। अन्तम इत्यन्तमः॥ उत त्राता। त्राता शिवः। शिवो भव। भव वरूथ्यः। वरूथ्य इति वरूथ्यः॥ तम् त्वा। त्वा शोचिष्ठ। शोचिष्ठ दीदिवः। दीदिव इति दीदिवः॥ सुम्नाय नूनम्। नूनमीमहे। ईमहे सखिभ्यः। सखिभ्य इति सखि—भ्यः॥ वसुरग्निः। अग्निर् वसुश्रवाः। वसुश्रवा इति वसु—श्रवाः॥ अच्छा नक्षि। नक्षि द्युमत्तमः। द्युमत्तमो रयिम्। द्युमत्तम इति द्युमत्—तमः। रयिम् दाः। दा इति दाः॥ ॥ [१७] ॥

(जनाना मङ्गिरस इषꣳ सुशमी तिग्मजंभ पुपूर्या अर्वाङ् वसुश्रवाः पञ्च च) ॥ ४ ॥

इ॒न्द्रा॒ग्निभ्या᳚म् त्वा। इ॒न्द्रा॒ग्निभ्या॒मिती᳚न्द्रा॒ग्नि—भ्या॒म्। त्वा॒ स॒युजा᳚। स॒युजा॑ यु॒जा। स॒यु-
जेति॑ स—यु॒जा᳚। यु॒जा यु॑नज्मि। यु॒नज्म्या॒घा॒राभ्या᳚म्। आ॒घा॒राभ्या॑म् तेज॑सा। आ॒घा॒राभ्या॒-
मित्या᳚—घा॒राभ्या᳚म्। तेज॑सा॒ वर्च॑सा। वर्च॑सो॒क्थेभि॑ः। उ॒क्थेभि॒ः स्तोमे॑भिः। स्तोमे॑भि॒श्छ-
न्दो॑भिः। छन्दो॑भी र॒य्यै। छन्दो॑भि॒रिति॒ छन्द॑ः—भि॒ः। र॒य्यै पोषा॑य। पोषा॑य सजा॒ताना᳚म्।
स॒जा॒ताना॑म् मद्ध्यम॒स्थेया॑य। स॒जा॒ताना॒मिति॑ स—जा॒ताना᳚म्। म॒द्ध्य॒म॒स्थेया॑य मया᳚। म॒द्ध्य॒-
म॒स्थे॒या॒येति॑ मद्ध्यम—स्थेया॑य। मया᳚ त्वा। त्वा॒ स॒युजा᳚। स॒युजा॑ यु॒जा। स॒युजेति॑ स—यु॒जा᳚।
यु॒जा यु॑नज्मि। यु॒नज्म्य॒म्बा। अ॒म्बा दु॒ला। दु॒ला नि॑त॒त्निः। नि॒त॒त्निर॒भ्रय॑न्ती। नि॒त॒त्निरिति॑ नि—
त॒त्निः। अ॒भ्रय॑न्ती मे॒घय॑न्ती। मे॒घय॑न्ती व॒र्षय॑न्ती। व॒र्षय॑न्ती चुपु॒णीका᳚। चु॒पु॒णीका॒ नाम॑।
नामा॑सि। अ॒सि॒ प्र॒जाप॑तिना। प्र॒जाप॑तिना त्वा। प्र॒जाप॑ति॒नेति॑ प्र॒जा—प॒ति॒ना॒। त्वा॒ विश्वा॑भिः।
विश्वा॑भिर् धी॒भिः। धी॒भिरुप॑। उप॑ दधामि। द॒धा॒मि॒ पृ॒थि॒वी। पृ॒थि॒व्युद॒पुर॑म्। उ॒द॒पुर॒मन्ने॑न।
उ॒द॒पु॒रमित्यु॑द—पु॒रम्। अन्ने॑न वि॒ष्टा। वि॒ष्टा म॑नु॒ष्या᳚ः। म॒नु॒ष्या᳚स्ते। ते॒ गो॒प्तार॑ः। गो॒प्तारो॒ऽग्निः।
अ॒ग्निर् विय॑त्तः। विय॑त्तोऽस्याम्। विय॑त्त॒ इति॒ वि—य॒त्तः॒। अ॒स्याम् ताम्। ताम॒हम्। अ॒हम्
प्र। प्र प॑द्ये। प॒द्ये॒ सा। सा मे᳚। ॥ [१८] ॥ मे॒ शर्म॑। शर्म॑ च। च॒ वर्म॑। वर्म॑ च। चा॒स्तु॒।
अ॒स्त्वधि॑द्यौः। अधि॑द्यौर॒न्तरि॑क्षम्। अधि॑द्यौ॒रित्यधि॑—द्यौः। अ॒न्तरि॑क्षम् ब्रह्म॑णा। ब्रह्म॑णा
वि॒ष्टा। वि॒ष्टा म॒रुत॑ः। म॒रुत॑स्ते। ते॒ गो॒प्तार॑ः। गो॒प्तारो॑ वा॒युः। वा॒युर् विय॑त्तः। विय॑त्तोऽस्याम्।
विय॑त्त॒ इति॒ वि—य॒त्तः॒। अ॒स्याम् ताम्। ताम॒हम्। अ॒हम् प्र। प्र प॑द्ये। प॒द्ये॒ सा। सा मे᳚। मे॒ शर्म॑।
शर्म॑ च। च॒ वर्म॑। वर्म॑ च। चा॒स्तु॒। अ॒स्तु॒ द्यौः। द्यौरप॑राजिता। अप॑राजिता॒ऽमृते॑न। अप॑राजि॒-
तेत्यप॑रा—जि॒ता॒। अ॒मृते॑न वि॒ष्टा। वि॒ष्टाऽऽदि॒त्याः। आ॒दि॒त्यास्ते᳚। ते॒ गो॒प्तार॑ः। गो॒प्तार॒ः सूर्य॑ः।
सूर्यो॑ विय॑त्तः। विय॑त्तोऽस्याम्। विय॑त्त॒ इति॒ वि—य॒त्तः॒। अ॒स्याम् ताम्। ताम॒हम्। अ॒हम् प्र। प्र
प॑द्ये। प॒द्ये॒ सा। सा मे᳚। मे॒ शर्म॑। शर्म॑ च। च॒ वर्म॑। वर्म॑ च। चा॒स्तु॒। अ॒स्त्वित्य॑स्तु॥ ॥ [१९] ॥

(सा ऽष्टाच॑त्वारिꣳशच्च) ॥ ५ ॥

बृह॒स्पति॑स्त्वा। त्वा॒ सा॒द॒य॒तु॒। सा॒द॒य॒तु॒ पृ॒थि॒व्याः। पृ॒थि॒व्याः पृ॒ष्ठे। पृ॒ष्ठे ज्योति॑ष्मतीम्।
ज्योति॑ष्मती॒व्ँविश्व॑स्मै। विश्व॑स्मै प्रा॒णाय॑। प्रा॒णाया॑पा॒नाय॑। प्रा॒णायेति॑ प्र—अ॒नाय॑। अ॒पा॒नाय॒

विश्वम्। अपानायेत्यप—अनाय। विश्वं ज्योतिः। ज्योतिर् यच्छ। यच्छाग्निः। अग्निस्ते। तेऽधिपतिः। अधिपतिर् विश्वकर्मा। अधिपतिरित्यधि—पतिः। विश्वकर्मा त्वा। विश्वकर्मेति विश्व—कर्मा। त्वा सादयतु। सादयत्वन्तरिक्षस्य। अन्तरिक्षस्य पृष्ठे। पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्। ज्योतिष्मतीँ्विश्वस्मै। विश्वस्मै प्राणाय। प्राणायापानाय। प्राणायेति प्र—अनाय। अपानाय विश्वम्। अपानायेत्यप—अनाय। विश्वम् ज्योतिः। ज्योतिर् यच्छ। यच्छ वायुः। वायुस्ते। तेऽधिपतिः। अधिपतिः प्रजापतिः। अधिपतिरित्यधि—पतिः। प्रजापतिस्त्वा। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। त्वा सादयतु। सादयतु दिवः। दिवः पृष्ठे। पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्। ज्योतिष्मतीँ्विश्वस्मै। विश्वस्मै प्राणाय। प्राणायापानाय। प्राणायेति प्र—अनाय। अपानाय विश्वम्। अपानायेत्यप—अनाय। विश्वम् ज्योतिः। ज्योतिर् यच्छ। यच्छ परमेष्ठी। परमेष्ठी ते। तेऽधिपतिः। अधिपतिः पुरोवातसनिः। अधिपतिरित्यधि—पतिः। पुरोवातसनिरसि। पुरोवातसनिरिति पुरोवात—सनिः। अस्यभ्रसनिः। अभ्रसनिरसि। अभ्रसनिरित्यभ्र—सनिः। असि विद्युथ्सनिः। विद्युथ्सनिरसि। विद्युथ्सनिरिति विद्युत्—सनिः। ॥ [२०] ॥ असि स्तनयित्नुसनिः। स्तनयित्नुसनिरसि। स्तनयित्नुसनिरिति स्तनयित्नु—सनिः। असि वृष्टिसनिः। वृष्टिसनिरसि। वृष्टिसनिरिति वृष्टि—सनिः। अस्यग्नेः। अग्नेर् यानी। यान्यसि। असि देवानाम्। देवानामग्नेयानी। अग्नेयान्यसि। अग्नेयानीत्यग्ने—यानी। असि वायोः। वायोर् यानी। यान्यसि। असि देवानाम्। देवानाँ्वायोयानी। वायोयान्यसि। वायोयानीति वायो—यानी। अस्यन्तरिक्षस्य। अन्तरिक्षस्य यानी। यान्यसि। असि देवानाम्। देवानामन्तरिक्षयानी। अन्तरिक्षयान्यसि। अन्तरिक्षयानीत्यन्तरिक्ष—यानी। अस्यन्तरिक्षम्। अन्तरिक्षमसि। अस्यन्तरिक्षाय। अन्तरिक्षाय त्वा। त्वा सलिलाय। सलिलाय त्वा। त्वा सर्णीकाय। सर्णीकाय त्वा। त्वा सतीकाय। सतीकाय त्वा। सतीकायेति स—तीकाय। त्वा केताय। केताय त्वा। त्वा प्रचेतसे। प्रचेतसे त्वा। प्रचेतस इति प्र—चेतसे। त्वा विवस्वते। विवस्वते त्वा। त्वा दिवः। दिवस्त्वा। त्वा ज्योतिषे। ज्योतिष आदित्येभ्यः। आदित्येभ्यस्त्वा। त्वर्चे। ऋचे त्वा। त्वा रुचे। रुचे त्वा। त्वा द्युते। द्युते त्वा। त्वा भासे। भासे त्वा। त्वा ज्योतिषे। ज्योतिषे त्वा। त्वा यशोदाम्। यशोदाम् त्वा। यशोदामिति यशः—दाम्। त्वा यशसि। यशसि तेजोदाम्। तेजोदां त्वा। तेजोदामिति तेजः—

दाम्। त्वा तेजसि। तेजसि पयोदाम्। पयोदाम् त्वा। पयोदामिति पयः—दाम्। त्वा पयसि। पयसि वर्चोदाम्। वर्चोदाम् त्वा। वर्चोदामिति वर्चः—दाम्। त्वा वर्चसि। वर्चसि द्रविणोदाम्। द्रविणोदाम् त्वा। द्रविणोदामिति द्रविणः—दाम्। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयामि तेन। तेनर्षिणा। ऋषिणा तेन। तेन ब्रह्मणा। ब्रह्मणा तया। तया देवतया। देवतयाऽङ्गिरस्वत्। अङ्गिरस्वद् ध्रुवा। ध्रुवा सीद। सीदेति सीद॥ ॥ [२१] ॥

(विद्युथ्सनि द्युते त्वै कान्नत्रिꣳशच्च) ॥ ६ ॥

भूयस्कृदसि। भूयस्कृदिति भूयः—कृत्। असि वरिवस्कृत्। वरिवस्कृदसि। वरिवस्कृदिति वरिवः—कृत्। असि प्राची। प्राच्यसि। अस्यूद्ध्वा। ऊद्ध्वाऽसि। अस्यन्तरिक्षसत्। अन्तरिक्षसदसि। अन्तरिक्षसदित्यन्तरिक्ष—सत्। अस्यन्तरिक्षे। अन्तरिक्षे सीद। सीदाप्सुषत्। अप्सुषदसि। अप्सुषदित्यप्सु—सत्। असि श्येनसत्। श्येनसदसि। श्येनसदिति श्येन—सत्। असि गृद्ध्रसत्। गृद्ध्रसदसि। गृद्ध्रसदिति गृद्ध्र—सत्। असि सुपर्णसत्। सुपर्णसदसि। सुपर्णसदिति सुपर्ण—सत्। असि नाकसत्। नाकसदसि। नाकसदिति नाक—सत्। असि पृथिव्याः। पृथिव्यास्त्वा। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयाम्यन्तरिक्षस्य। अन्तरिक्षस्य त्वा। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयामि दिवः। दिवस्त्वा। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयामि दिशाम्। दिशाम् त्वा। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयामि द्रविणोदाम्। द्रविणोदाम् त्वा। द्रविणोदामिति द्रविणः—दाम्। त्वा द्रविणे। द्रविणे सादयामि। सादयामि प्राणम्। प्राणम् मे। प्राणमिति प्र—अनम्। मे पाहि। पाह्यपानम्। अपानम् मे। अपानमित्यप—अनम्। मे पाहि। पाहि व्यानम्। व्यानम् मे। व्यानमिति वि—अनम्। मे पाहि। ॥ [२२] ॥ पाह्यायुः। आयुर् मे। मे पाहि। पाहि विश्वायुः। विश्वायुर् मे। विश्वायुरिति विश्व—आयुः। मे पाहि। पाहि सर्वायुः। सर्वायुर् मे। सर्वायुरिति सर्व—आयुः। मे पाहि। पाह्यग्ने। अग्ने यत्। यत् ते। ते परम्। परꣳ हृत्। हृन् नाम। नाम तौ। तावा। एहि। इहि सम्। सꣳ रभावहै। रभावहै पाञ्चजन्येषु। पाञ्चजन्येष्वपि। पाञ्चजन्येष्विति पाञ्च—जन्येषु। अप्येधि।

एद्ध्यग्ने। अग्ने यावाः। यावा अयावाः। अयावा एवाः। एवा ऊमाः। ऊमाः सब्दः। सब्दः सगरः। सगरः सुमेकः। सुमेक इति सु—मेकः॥ ॥ [२३] ॥

(व्यानं मे द्वात्रिꣳशच्च) ॥ ७ ॥

अग्निना विश्वाषाट्। विश्वाषाट्थ् सूर्येण। सूर्येण स्वराट्। स्वराट् क्रत्वा। स्वराडिति स्व—राट्। क्रत्वा शचीपतिः। शचीपतिर्ऋषभेण। ऋषभेण त्वष्टा। त्वष्टा यज्ञेन। यज्ञेन मघवान्। मघवान् दक्षिणया। मघवानिति मघ—वान्। दक्षिणया सुवर्गः। सुवर्गो मन्युना। सुवर्ग इति सुवः—गः। मन्युना वृत्रहा। वृत्रहा सौहार्द्येन। वृत्रहेति वृत्र—हा। सौहार्द्येन तनूधाः। तनूधा अन्नेन। तनूधा इति तनू—धाः। अन्नेन गयः। गयः पृथिव्या। पृथिव्याऽसनोत्। असनोदृग्भिः। ऋग्भिरन्नादः। ऋग्भिरित्यृक्—भिः। अन्नादो वषट्कारेण। अन्नाद इत्यन्न—अदः। वषट्कारेणर्द्धः। वषट्कारेणेति वषट्—कारेण। ऋद्धः साम्ना। साम्ना तनूपाः। तनूपा विराजा। तनूपा इति तनू—पाः। विराजा ज्योतिष्मान्। विराजेति वि—राजा। ज्योतिष्मान् ब्रह्मणा। ब्रह्मणा सोमपाः। सोमपा गोभिः। सोमपा इति सोम—पाः। गोभिर् यज्ञम्। यज्ञम् दाधार। दाधार क्षत्रेण। क्षत्रेण मनुष्यान्। मनुष्यानश्वेन। अश्वेन च। च रथेन। रथेन च। च वज्री। वज्र्यृतुभिः। ऋतुभिः प्रभुः। ऋतुभिरित्यृतु—भिः। प्रभुः सँव्वथ्सरेण। प्रभुरिति प्र—भुः। सँव्वथ्सरेण परिभूः। सँव्वथ्सरेणेति सं—वथ्सरेण। परिभूस्तपसा। परिभूरिति परि—भूः। तपसाऽनाधृष्टः। अनाधृष्टः सूर्यः। अनाधृष्ट इत्यना—धृष्टः। सूर्यः सन्न्। सन् तनूभिः। तनूभिरिति तनूभिः॥ ॥ [२४] ॥

(अग्नि रैकान्न पञ्चाशत्) ॥ ८ ॥

प्रजापतिर् मनसा। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। मनसाऽन्धः। अन्धोऽच्छेतः। अच्छेतो धाता। अच्छेत इत्यच्छ—इतः। धाता दीक्षायाम्। दीक्षायाꣳ सविता। सविता भृत्याम्।

भृत्याम् पूषा। पूषा सोमक्रयण्याम्। सोमक्रयण्याँव्वरुणः। सोमक्रयण्यामिति सोम— क्रयण्याम्। वरुण उपनद्धः। उपनद्धोऽसुरः। उपनद्ध इत्युप—नद्धः। असुरः क्रीयमाणः। क्रीयमाणो मित्रः। मित्रः क्रीतः। क्रीतः शिपिविष्टः। शिपिविष्ट आसादितः। शिपिविष्ट इति शिपि—विष्टः। आसादितो नरन्धिषः। आसादित इत्या—सादितः। नरन्धिषः प्रोह्यमाणः। प्रोह्यमाणोऽधिपतिः। प्रोह्यमाण इति प्र—उह्यमानः। अधिपतिरागतः। अधिपतिरित्यधि— पतिः। आगतः प्रजापतिः। आगत इत्या—गतः। प्रजापतिः प्रणीयमानः। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। प्रणीयमानोऽग्निः। प्रणीयमान इति प्र—नीयमानः। अग्निराग्नीँद्ध्रे। आग्नीँद्ध्रे बृहस्पतिः। आग्नीँद्ध्र इत्याग्नि—इद्ध्रे। बृहस्पतिराग्नीँद्ध्रात्। आग्नीँद्ध्रात् प्रणीयमानः। आग्नीँद्ध्रादित्याग्नि—इद्ध्रात्। प्रणीयमान इन्द्रः। प्रणीयमान इति प्र—नीयमानः। इन्द्रो हविर्द्धाने। हविर्द्धानेऽदितिः। हविर्द्धान इति हविः—धाने। अदितिरासादितः। आसादितो विष्णुः। आसादित इत्या—सादितः। विष्णुरुपावह्रियमाणः। उपावह्रियमाणोऽथर्वा। उपा- वह्रियमाण इत्युप—अवह्रियमाणः। अथर्वोपोँत्तः। उपोँत्तो यमः। उपोँत्त इत्युप—उत्तः। यमोऽभिषुतः। अभिषुतोऽपूतपाः। अभिषुत इत्यभि—सुतः। अपूतपा आधूयमानः। अपूतपा इत्यपूत—पाः। आधूयमानो वायुः। आधूयमान इत्या—धूयमानः। वायुः पूयमानः। पूयमानो मित्रः। मित्रः ख्षीरश्रीः। ख्षीरश्रीर् मन्थी। ख्षीरश्रीरिति ख्षीर—श्रीः। मन्थी सक्तुश्रीः। सक्तुश्रीर् वैँश्वदेवः। सक्तुश्रीरिति सक्तु—श्रीः। वैश्वदेव उन्नीतः। वैश्वदेव इति वैश्व—देवः। उन्नीतो रुद्रः। उन्नीत इत्युत्—नीतः। रुद्र आहुतः। आहुतो वायुः। आहुत इत्या—हुतः। वायुरावृत्तः। आवृत्तो नृचख्षाः। आवृत्त इत्या—वृत्तः। नृचख्षाः प्रतिख्यातः। नृचख्षा इति नृ—चख्षाः। प्रतिख्यातो भख्षः। प्रतिख्यात इति प्रति—ख्यातः। भख्ष आगतः। आगतः पितृणाम्। आगत इत्या—गतः। पितृणाम् नाराशꣳसः। नाराशꣳसोऽसुः। असुरात्तः। आत्तः सिन्धुः। सिन्धुरवभृथम्। अवभृथमवप्रयन्न्। अवभृथमित्यव—भृथम्। अवप्रयन्थ् समुद्रः। अवप्रयन्नित्यव—प्रयन्न्। समुद्रोऽवगतः। अवगतः सलिलः। अवगत इत्यव—गतः। सलिलः प्रप्लुतः। प्रप्लुतः सुवः। प्रप्लुत इति प्र—प्लुतः। सुवरुदृचम्। उदृचम् गतः। उदृचमित्युत्— ऋचम्। गत इति गतः॥ ॥ [२५] ॥

(रुद्र एकविꣳशतिश्च) ॥ ९ ॥

कृत्तिका नक्षत्रम्। नक्षत्रमग्निः। अग्निर् देवता। देवताऽग्नेः। अग्ने रुचः। रुचः स्थ। स्थ प्रजापतेः। प्रजापतेर् धातुः। प्रजापतेरिति प्रजा—पतेः। धातुः सोमस्य। सोमस्यर्चे। ऋचे त्वा। त्वा रुचे। रुचे त्वा। त्वा द्युते। द्युते त्वा। त्वा भासे। भासे त्वा। त्वा ज्योतिषे। ज्योतिषे त्वा। त्वा रोहिणी। रोहिणी नक्षत्रम्। नक्षत्रम् प्रजापतिः। प्रजापतिर् देवता। प्रजापतिरिति प्रजा—पतिः। देवता मृगशीर्षम्। मृगशीर्षम् नक्षत्रम्। मृगशीर्षमिति मृग—शीर्षम्। नक्षत्रꣳ सोमः। सोमो देवता। देवताऽऽर्द्रा। आर्द्रा नक्षत्रम्। नक्षत्रꣳ रुद्रः। रुद्रो देवता। देवता पुनर्वसू। पुनर्वसू नक्षत्रम्। पुनर्वसू इति पुनः—वसू। नक्षत्रमदितिः। अदितिर् देवता। देवता तिष्यः। तिष्यो नक्षत्रम्। नक्षत्रम् बृहस्पतिः। बृहस्पतिर् देवता। देवताऽऽश्रेषाः। आश्रेषा नक्षत्रम्। आश्रेषा इत्या—श्रेषाः। नक्षत्रꣳ सर्पाः। सर्पा देवता। देवता मघाः। मघा नक्षत्रम्। नक्षत्रम् पितरः। पितरो देवता। देवता फल्गुनी। फल्गुनी नक्षत्रम्। फल्गुनी इति फल्गुनी। नक्षत्रमर्यमा। ॥ [२६] ॥ अर्यमा देवता। देवता फल्गुनी। फल्गुनी नक्षत्रम्। फल्गुनी इति फल्गुनी। नक्षत्रम् भगः। भगो देवता। देवता हस्तः। हस्तो नक्षत्रम्। नक्षत्रꣳ सविता। सविता देवता। देवता चित्रा। चित्रा नक्षत्रम्। नक्षत्रमिन्द्रः। इन्द्रो देवता। देवता स्वाती। स्वाती नक्षत्रम्। नक्षत्रँव्वायुः। वायुर् देवता। देवता विशाखे। विशाखे नक्षत्रम्। विशाखे इति वि—शाखे। नक्षत्रमिन्द्राग्नी। इन्द्राग्नी देवता। इन्द्राग्नी इतीन्द्र—अग्नी। देवताऽनूराधाः। अनूराधा नक्षत्रम्। अनूराधा इत्यनु—राधाः। नक्षत्रम् मित्रः। मित्रो देवता। देवता रोहिणी। रोहिणी नक्षत्रम्। नक्षत्रमिन्द्रः। इन्द्रो देवता। देवता विचृतौ। विचृतौ नक्षत्रम्। विचृताविति वि—चृतौ। नक्षत्रम् पितरः। पितरो देवता। देवताऽषाढाः। अषाढा नक्षत्रम्। नक्षत्रमापः। आपो देवता। देवताऽषाढाः। अषाढा नक्षत्रम्। नक्षत्रँव्विश्वे। विश्वे देवाः। देवा देवता। देवता श्रोणा। श्रोणा नक्षत्रम्। नक्षत्रँव्विष्णुः। विष्णुर् देवता। देवता श्रविष्ठाः। श्रविष्ठा नक्षत्रम्। नक्षत्रँव्वसवः। वसवो देवता। ॥ [२७] ॥ देवता शतभिषक्। शतभिषङ् नक्षत्रम्। शत-

भिषगिति शत—भिषक्। नक्षत्रमिन्द्रः। इन्द्रो देवता। देवता प्रोष्ठपदाः। प्रोष्ठपदा नक्षत्रम्। प्रोष्ठपदा इति प्रोष्ठ—पदाः। नक्षत्रमजः। अज एकपात्। एकपाद् देवता। एकपादित्येक—पात्। देवता प्रोष्ठपदाः। प्रोष्ठपदा नक्षत्रम्। प्रोष्ठपदा इति प्रोष्ठ—पदाः। नक्षत्रमहिः। अहिर् बुध्नियः। बुध्नियो देवता। देवता रेवती। रेवती नक्षत्रम्। नक्षत्रं पूषा। पूषा देवता। देव-ताऽश्वयुजौ। अश्वयुजौ नक्षत्रम्। अश्वयुजावित्यश्व—युजौ। नक्षत्रमश्विनौ। अश्विनौ देवता। देवताऽपभरणीः। अपभरणीर् नक्षत्रम्। अपभरणीरित्यप—भरणीः। नक्षत्रयँ्यमः। यमो देवता। देवता पूर्णा। पूर्णा पश्चात्। पश्चाद् यत्। यत् ते। ते देवाः। देवा अदधुः। अदधुरि-त्यदधुः॥ ॥ [२८] ॥

(फल्गुनी नक्षत्रं वसव स्त्रयस्त्रिꣳशाच्च) ॥ १० ॥

मधुश्च। च माधवः। माधवश्च। च वासन्तिकौ। वासन्तिकावृतू। ऋतू शुक्रः। ऋतू इत्यृतू। शुक्रश्च। च शुचिः। शुचिश्च। च ग्रैष्मौ। ग्रैष्मावृतू। ऋतू नभः। ऋतू इत्यृतू। नभश्च। च नभस्यः। नभस्यश्च। च वार्षिकौ। वार्षिकावृतू। ऋतू इषः। ऋतू इत्यृतू। इषश्च। चोर्जः। ऊर्जश्च। च शारदौ। शारदावृतू। ऋतू सहः। ऋतू इत्यृतू। सहश्च। च सहस्यः। सहस्यश्च। च हैमन्तिकौ। हैमन्तिकावृतू। ऋतू तपः। ऋतू इत्यृतू। तपश्च। च तपस्यः। तपस्यश्च। च शैशिरौ। शैशिरावृतू। ऋतू अग्नेः। ऋतू इत्यृतू। अग्नेरन्तःश्लेषः। अन्तःश्लेषोऽसि। अन्तःश्लेष इत्यन्तः—श्लेषः। असि कल्पेताम्। कल्पेताम् द्यावापृथिवी। द्यावापृथिवी कल्पन्ताम्। द्यावा-पृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। कल्पन्तामापः। आप ओषधीः। ओषधीः कल्पन्ताम्। कल्पन्ता-मग्नयः। अग्नयः पृथक्। पृथङ् मम। मम ज्यैष्ठ्याय। ज्यैष्ठ्याय सव्रताः। सव्रता ये। सव्रता इति स—व्रताः। ॥ [२९] ॥ येऽग्नयः। अग्नयः समनसः। समनसोऽन्तरा। समनस इति स—मनसः। अन्तरा द्यावापृथिवी। द्यावापृथिवी शैशिरौ। द्यावापृथिवी इति द्यावा—पृथिवी। शैशिरावृतू। ऋतू अभि। ऋतू इत्यृतू। अभि कल्पमानाः। कल्पमाना इन्द्रम्। इन्द्रमिव। इव देवाः। देवा अभि। अभि सम्। संविशन्तु। विशन्तु सयँ्यत्। सयँ्यच् च। सयँ्यदिति सम्—यत्। च प्रचेताः। प्रचेताश्च। प्रचेता इति प्र—चेताः। चाग्नेः। अग्नेः सोमस्य। सोमस्य सूर्यस्य। सूर्य-

स्योग्रा। उग्रा च। च भीमा। भीमा च। च पितृणाम्। पितृणाय्ँयमस्य। यमस्येन्द्रस्य। इन्द्रस्य ध्रुवा। ध्रुवा च। च पृथिवी। पृथिवी च। च देवस्य। देवस्य सवितुः। सवितुर् मरुताम्। मरुताव्ँवरुणस्य। वरुणस्य धर्त्री। धर्त्री च। च धरित्री। धरित्री च। च मित्रावरुणयोः। मित्रावरुणयोर् मित्रस्य। मित्रावरुणयोरिति मित्रा—वरुणयोः। मित्रस्य धातुः। धातुः प्राची। प्राची च। च प्रतीची। प्रतीची च। च वसूनाम्। वसूनाꣳ रुद्राणाम्। रुद्राणामादित्यानाम्। ॥ [३०] ॥ आदित्यानाम् ते। ते ते। तेऽधिपतयः। अधिपतयस्तेभ्यः। अधिपतय इत्यधि—पतयः। तेभ्यो नमः। नमस्ते। ते नः। नो मृडयन्तु। मृडयन्तु ते। ते यम्। यम् द्विष्मः। द्विष्मो यः। यश्च। च नः। नो द्वेष्टि। द्वेष्टि तम्। तव्ँवः। वो जम्भे। जम्भे दधामि। दधामि सहस्रस्य। सहस्रस्य प्रमा। प्रमा असि। प्रमेति प्र—मा। असि सहस्रस्य। सहस्रस्य प्रतिमा। प्रतिमा असि। प्रतिमेति प्रति—मा। असि सहस्रस्य। सहस्रस्य विमा। विमा असि। विमेति वि—मा। असि सहस्रस्य। सहस्रस्योन्मा। उन्मा असि। उन्मेत्युत्—मा। असि साहस्रः। साहस्रोऽसि। असि सहस्राय। सहस्राय त्वा। त्वेमाः। इमा मे। मे अग्ने। अग्न इष्टकाः। इष्टका धेनवः। धेनवः सन्तु। सन्त्वेका। एका च। च शतम्। शतम् च। च सहस्रम्। सहस्रम् च। चायुतम्। अयुतम् च। च नियुतम्। ॥ [३१] ॥ नियुतम् च। नियुतमिति नि—युतम्। च प्रयुतम्। प्रयुतम् च। प्रयुतमिति प्र—युतम्। चार्बुदम्। अर्बुदम् च। च न्यर्बुदम्। न्यर्बुदम् च। न्यर्बुदमिति नि—अर्बुदम्। च समुद्रः। समुद्रश्च। च मद्ध्यम्। मद्ध्यम् च। चान्तः। अन्तश्च। च परार्द्धः। परार्द्धश्च। परार्द्ध इति पर—अर्द्धः। चेमाः। इमा मे। मे अग्ने। अग्न इष्टकाः। इष्टका धेनवः। धेनवः सन्तु। सन्तु षष्टिः। षष्टिः सहस्रम्। सहस्रमयुतम्। अयुतमक्षीयमाणाः। अक्षीयमाणा ऋतस्थाः। ऋतस्थाः स्थ। ऋतस्था इत्यृत—स्थाः। स्थर्तावृधः। ऋतावृधो घृतश्चुतः। ऋतावृध इत्यृत—वृधः। घृतश्चुतो मधुश्चुतः। घृतश्चुत इति घृत—श्चुतः। मधुश्चुत ऊर्जस्वतीः। मधुश्चुत इति मधु—श्चुतः। ऊर्जस्वतीः स्वधाविनीः। स्वधाविनीस्ताः। स्वधाविनीरिति स्वधा—विनीः। ता मे। मे अग्ने। अग्न इष्टकाः। इष्टका धेनवः। धेनवः सन्तु। सन्तु विराजः। विराजो नाम। विराज इति वि—राजः। नाम कामदुघाः। कामदुघा अमुत्र। कामदुघा इति काम—दुघाः। अमुत्रामुष्मिन्न्। अमुष्मिँल्लोके। लोक इति लोके॥ ॥ [३२] ॥

(सर्व्रता रुद्राणां मयुतश्च पञ्चचत्वारिꣳशच्च) ॥ ११ ॥

समिद् दिशाम्। समिदिति सम्—इत्। दिशामाशया। आशया नः। नः सुवर्वित्। सुवर्विन् मधोः। सुवर्विदिति सुवः—वित्। मधोरतः। अतो माधवः। माधवः पातु। पात्वस्मान्। अस्मानित्यस्मान्॥ अग्निर् देवः। देवो दुष्टरीतुः। दुष्टरीतुरदाभ्यः। अदाभ्य इदम्। इदम् ख्षत्रम्। ख्षत्रꣳ रख्षतु। रख्षतु पातु। पात्वस्मान्। अस्मानित्यस्मान्॥ रथन्तरꣳ सामभिः। रथन्तरमिति रथम्—तरम्। सामभिः पातु। सामभिरिति साम—भिः। पात्वस्मान्। अस्मान् गायत्री। गायत्री छन्दसाम्। छन्दसाँविश्वरूपा। विश्वरूपेति विश्व—रूपा॥ त्रिवृन् नः। त्रिवृदिति त्रि—वृत्। नो विष्ठया। विष्ठया स्तोमः। विष्ठयेति वि—स्थया। स्तोमो अह्नाम्। अह्नाꣳ समुद्रः। समुद्रो वातः। वात इदम्। इदमोजः। ओजः पिपर्तु। पिपर्त्विति पिपर्तु॥ उग्रा दिशाम्। दिशामभिभूतिः। अभिभूतिर् वयोधाः। अभिभूतिरित्यभि—भूतिः। वयोधाः शुचिः। वयोधा इति वयः—धाः। शुचिः शुक्रे। शुक्रे अहनि। अहन्योजसीना। ओजसीनेत्योजसीना॥ इन्द्राधिपतिः। अधिपतिः पिपृतात्। अधिपतिरित्यधि—पतिः। पिपृतादतः। अतो नः। नो महि। महि ख्षत्रम्। ॥ [३३] ॥ ख्षत्रँविश्वतः। विश्वतो धारय। धारयेदम्। इदमितीदम्॥ बृहथ् साम। साम ख्षत्रभृत्। ख्षत्रभृद् वृद्धवृष्णियम्। ख्षत्रभृदिति ख्षत्र—भृत्। वृद्धवृष्णियम् त्रिष्टुभा। वृद्धवृष्णियमिति वृद्ध—वृष्णियम्। त्रिष्टुभौजः। ओजः शुभितम्। शुभितमुग्रवीरम्। उग्रवीरमित्युग्र—वीरम्॥ इन्द्र स्तोमेन। स्तोमेन पञ्चदशेन। पञ्चदशेन मद्ध्यम्। पञ्चदशेनेति पञ्च—दशेन। मद्ध्यमिदम्। इदँवातेन। वातेन सगरेण। सगरेण रख्ष। रख्षेति रख्ष॥ प्राची दिशाम्। दिशाꣳ सहयशाः। सहयशा यशस्वती। सहयशा इति सह—यशाः। यशस्वती विश्वे। विश्वे देवाः। देवाः प्रावृषा। प्रावृषाऽह्नाम्। अह्नाꣳ सुवर्वती। सुवर्वतीति सुवः—वती॥ इदम् ख्षत्रम्। ख्षत्रम् दुष्टरम्। दुष्टरमस्तु। अस्त्वोजः। ओजोऽनाधृष्टम्। अनाधृष्टꣳ सहस्रियम्। अनाधृष्टमित्यना—धृष्टम्। सहस्रियꣳ सहस्वत्। सहस्वदिति सहस्वत्॥ वैरूपे सामन्न्। सामन्निह। इह तत्। तच्छकेम। शकेम जगत्या। जगत्यैनम्। एनँविख्षु। विख्ष्वा। आ वेशयामः। वेशयाम इति वेशयामः॥ विश्वे देवाः। देवाः सप्तदशेन। सप्तदशेन वर्चः।

सप्तदशेनेति सप्त—दशेन। ॥ [३४] ॥ वर्च इदम्। इदम् ख्षत्रम्। ख्षत्रꣳ सलिलवातम्। सलिलवातमुग्रम्। सलिलवातमिति सलिल—वातम्। उग्रमित्युग्रम्॥ धर्त्री दिशाम्। दिशाम् ख्षत्रम्। ख्षत्रमिदम्। इदम् दाधार। दाधारोपस्था। उपस्थाऽऽशानाम्। उपस्थेत्युप—स्था। आशानाम् मित्रवत्। मित्रवदस्तु। मित्रवदिति मित्र—वत्। अस्त्वोजः। ओज इत्योजः॥ मित्रावरुणा शरदा। मित्रावरुणेति मित्रा—वरुणा। शरदाऽह्नाम्। अह्नाम् चिकित्नू। चिकित्नू अस्मै। चिकित्नू इति चिकित्नू। अस्मै राष्ट्राय। राष्ट्राय महि। महि शर्म। शर्म यच्छतम्। यच्छतमिति यच्छतम्॥ वैराजे सामन्न्। सामन्नधि। अधि मे। मे मनीषा। मनीषाऽनुष्टुभा। अनुष्टुभा सम्भृतम्। अनुष्टुभेत्यनु—स्तुभा। सम्भृतँव्वीर्यम्। सम्भृतमिति सम्—भृतम्। वीर्यꣳ सहः। सह इति सहः॥ इदम् ख्षत्रम्। ख्षत्रम् मित्रवत्। मित्रवदार्द्रदानु। मित्रवदिति मित्र—वत्। आर्द्रदानु मित्रावरुणा। आर्द्रदान्वित्यार्द्र—दानु। मित्रावरुणा ररख्षतम्। मित्रावरुणेति मित्रा—वरुणा। ररख्षतमाधिपत्यैः। आधिपत्यैरित्याधि—पत्यैः॥ सम्राड् दिशाम्। सम्राडिति सम्—राट्। दिशाꣳ सहसाम्नी। सहसाम्नी सहस्वती। सहसाम्नीति सह—साम्नी। सहस्वत्यृतुः। ऋतुर्हेमन्तः। हेमन्तो विष्ठया। विष्ठया नः। विष्ठयेति वि—स्थया। नः पिपर्तु। पिपर्त्विति पिपर्तु॥ अवस्युवाता बृहतीः। अवस्युवाता इत्यवस्यु—वाताः। ॥ [३५] ॥ बृहतीर् नु। नु शक्करीः। शक्करीरिमम्। इमय्यँज्ञम्। यज्ञमवन्तु। अवन्तु नः। नो घृताचीः। घृताचीरिति घृताचीः॥ सुवर्वती सुदुघा। सुवर्वतीति सुवः—वती। सुदुघा नः। सुदुघेति सु—दुघा। नः पयस्वती। पयस्वती दिशाम्। दिशाम् देवी। देव्यवतु। अवतु नः। नो घृताची। घृताचीति घृताची॥ त्वम् गोपाः। गोपाः पुरएता। गोपा इति गो—पाः। पुरएतोत। पुरएतेति पुरः—एता। उत पश्चात्। पश्चाद् बृहस्पते। बृहस्पते याम्याम्। याम्याँय्युङ्ग्धि। युङ्ग्धि वाचम्। वाचमिति वाचम्॥ ऊर्द्ध्वा दिशाम्। दिशाꣳ रन्तिः। रन्तिराशा। आशौषधीनाम्। ओषधीनाꣳ सँव्वथ्सरेण। सँव्वथ्सरेण सविता। सँव्वथ्सरेणेति सं—वथ्सरेण। सविता नः। नो अह्नाम्। अह्नामित्यह्नाम्॥ रेवथ् साम। सामातिछन्दाः। अतिछन्दा उ। अतिछन्दा इत्यति—छन्दाः। उ छन्दः। छन्दोऽजातशत्रुः। अजातशत्रुः स्योना। अजातशत्रुरित्यजात—शत्रुः। स्योना नः। नो अस्तु। अस्त्वित्यस्तु॥ स्तोमत्रयस्त्रिꣳशे भुवनस्य। स्तोमत्रयस्त्रिꣳश इति स्तोम—त्रयस्त्रिꣳशे। भुवनस्य पत्नि। पत्नि

विवस्वद्वाते। विवस्वद्वाते अभि। विवस्वद्वात इति विवस्वत्—वाते। अभि नः। नो गृणाहि। ॥ [३६] ॥ गृणाहीति गृणाहि॥ घृतवती सवितः। घृतवतीति घृत—वती। सवितराधिपत्यैः। आधिपत्यैः पयस्वती। आधिपत्यैरित्याधि—पत्यैः। पयस्वती रन्तिः। रन्तिराशा। आशा नः। नो अस्तु। अस्त्वित्यस्तु॥ ध्रुवा दिशाम्। दिशाव्विष्णुपत्नी। विष्णुपत्न्यघोरा। विष्णुपत्नीति विष्णु—पत्नी। अघोराऽस्य। अस्येशाना। ईशाना सहसः। सहसो या। या मनोता। मनोतेति मनोता॥ बृहस्पतिर् मातरिश्वा। मातरिश्वोत। उत वायुः। वायुः सन्धुवानाः। सन्धुवाना वाताः। सन्धुवाना इति सम्—धुवानाः। वाता अभि। अभि नः। नो गृणन्तु। गृणन्त्विति गृणन्तु॥ विष्टम्भो दिवः। विष्टम्भ इति वि—स्तम्भः। दिवो धरुणः। धरुणः पृथिव्याः। पृथिव्या अस्य। अस्येशाना। ईशाना जगतः। जगतो विष्णुपत्नी। विष्णुपत्नीति विष्णु—पत्नी॥ विश्वव्यचा इषयन्ती। विश्वव्यचा इति विश्व—व्यचाः। इषयन्ती सुभूतिः। सुभूतिः शिवा। सुभूतिरिति सु—भूतिः। शिवा नः। नो अस्तु। अस्त्वदितिः। अदितिरुपस्थे। उपस्थ इत्युप—स्थे॥ वैश्वानरो नः। न ऊत्या। ऊत्या पृष्टः। पृष्टो दिवि। दिव्यनु। अनु नः। नोऽद्य। अद्यानुमतिः। अनुमतिरनु। अनुमतिरित्यनु—मतिः। अन्वित्। इदनुमते। अनुमते त्वम्। अनुमत इत्यनु—मते। त्वम् कया। कया नः। नश्चित्रः। चित्र आ। आ भुवत्। भुवत् कः। को अद्य। अद्य युङ्क्ते। युङ्क्त इति युङ्क्ते॥ ॥ [३७] ॥

(महि सप्तदशोना ऽवस्युवाता अभि नो ऽनु न श्चतुर्दश च) ॥ १२ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

चतुर्थकाण्डे चतुर्थः प्रश्नः — क्रम पाठः — समाप्तः

अनुवाकाः	पञ्चशत्यः
१२	३७

ॐ